ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

वाराणसी शहर के उच्च प्राथमिक विद्यालयौं में विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति का अध्ययन

शशि कुशवाहा
शोधछात्रा, शिक्षा संकाय,
काशी हिन्दू विश्विद्यालय, वाराणसी

सारांश

समाज में भाषा का प्रयोग विचारों के आदान-प्रदान के लिए होता है। विद्यार्थी जिस समाज में रहता है, उसे उस समाज में उपयोग की जाने वाली भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता होनी चाहिए। जिससे वह अपने विचारों को भली-भाँति व्यक्त कर सके लेकिन जब हमारा समाज विविधताओं से परिपूर्ण हो तो ऐसी स्थिति में बहुभाषिकता कई प्रकार की समस्याओं का समाधान के रुप में कार्य करता है। विधालय समाज का लघु रुप कहा जाता हैं, जहाँ अनेक पृष्ठभूमि से विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते है, इन्हे इनकी भाषा में सुनना एवं समझना आवश्यक होता जिससे इनकी सहभागिता एवं अभिव्यक्ति प्रकट हो सकें। इस अभिव्यक्ति में शिक्षक का उचित सहयोग व मार्गदर्शन आवश्यक है। उसे विद्यार्थी के भाव को समझकर, उसके अनुरूप शब्दों को अभिव्यक्त करने में सहायता करनी चाहिए। यह कार्य केवल भाषा शिक्षक का नहीं बल्कि समस्त विषयों के शिक्षकों का कर्तव्य होना चाहिए। इस कर्त्तव्य निर्वाहन में शिक्षक को भाषायी विविधता की स्थिति का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति का अध्ययन किया गया।

कीवर्ड- भाषायी विविधता, उच्च प्राथमिक विद्यालय, वाराणसी शहर।

प्रस्तावना

भारतवर्ष विविधताओं वाला देश है और यही इसकी सुन्दरता भी है। यहाँ विविध धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों एवं भाषाओं से सम्बन्धित लोग निवास करते हैं। वाराणसी भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध शहर है इसे बनारस एवं काशी के नाम से भी जाना जाता है। यह संसार के प्राचीन बसे शहरों में से एक हैं, इसे हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र शहर माना जाता है तथा मोक्ष की नगरी के रुप में भी माना जाता हैं। ये भारत के पूर्व दिशा में गंगा नदी के बायी ओर के वक्राकार तट पर स्थित हैं। वाराणसी शहर अपने आप में भारत वर्ष के लगभग सभी क्षेत्रों और संस्कृतियों को समेटे हुए हैं। वाराणसी के धार्मिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक महत्व के कारण न केवल भारत के विभिन्न प्रान्तों से बल्कि विश्व के कई देशों से लोग यहाँ आकर बस गए और इस शहर के बहुसांस्कृतिक समाज का हिस्सा बन गए।

भाषा शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवयव होता है। सही मायने में कहे तो भाषा शिक्षा की आधार स्तंभ होती है क्योंकि ज्ञान को प्रदान करने, समझने एवं उसे अभिव्यक्त करने का प्रथम माध्यम भाषा ही है। मनुष्य को उत्कृष्ट सामाजिक जीवन जीने हेतु भाषा का विकसित एवं समृद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः विद्यालयों में बच्चों के विकास के प्राथमिक स्तर से ही भाषा विकास को शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों के साथ जोड़ना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भाषा की

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

महत्व को सभी आयोगों ने स्वीकार किया। विशेष रूप से कोठारी आयोग (1966) में त्रिभाषा सूत्र को सभी राज्यों द्वारा अपनाने तथा क्रियान्वयन का सुझाव दिया है। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत विद्यालय व विद्यार्थियों के बीच अन्तर को दूर करने का अच्छा विकल्प है क्योंकि बच्चा विद्यालय आने से पहले विभिन्न सामाजिक संबंधों के बीच अन्तःक्रियाओं का संचालन सीख जाता है। उसका अपना सचेतना एक जागृत होता है, उसके अपने क्षेत्र विशेष की संस्कृति व भाषा उसे प्रभावित करती है, चूंकि विद्यालय एक मानक भाषा को लेकर विद्यार्थियों में परिवर्तन व विकास नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चे की भाषा में समझकर उसे विद्यालयी भाषा से जोड़ा जाय, जिसके लिए बहुभाषिकता बेहद फायदेमंद होगा। ''यदि हम चाहते हैं कि ऐसा जनतंत्र पनपे जिसमें सभी की भागीदारी संभव हो सके तो हमें प्रत्येक बच्चे को उसकी भाषा में सुनना होगा....... त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करने के लिए कड़े नियमों के बजाय बहुभाषिकता को बनाए रखने व इसे जीवंतता प्रदान करने का प्रयास किसी भी भाषा योजना का केन्द्र होना चाहिए।'' (भारतीय भाषा राष्ट्रीय फोकस समूह, पृ0 21)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में भी भाषा को कक्षा कार्य नीति का मुख्य तत्व बताया गया है- ''बहुभाषिकता, जो बच्चे की अस्मिता का निर्माण करती है और जो भारत के भाषा परिदृश्य का विशिष्ट लक्षण है, उसका संसाधन के रूप में उपयोग कक्षा की कार्यनीति का हिस्सा बनाना तथा उसे लक्ष्य के रूप में रखना रचनात्मक भाषा शिक्षक का कार्य है। यह केवल उपलब्ध संसाधन का बेहतर इस्तेमाल नहीं है बल्कि इससे यह भी सुनिश्चित हो सकता है कि हर बच्चा स्वीकार्य और संरक्षित महसूस करे और भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर किसी को पीछे न छोड़ा जाय।'' भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र (2009) में भाषा की भूमिका को ठीक से सराहने के लिए समग्रवादी दृष्टिकोण अपनाने की बात कही है। भाषा के रचनागत, साहित्यिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय पक्षों को महत्व देते हुए इसे एक बहुआयामी स्थिति में रखकर इसकी पड़ताल की बात कहीं गयी, क्योंकि ये सभी आयाम भाषा को समाज से जोड़ने का कार्य शिक्षा का माध्यम के रूप में अपनाया जाता है, किन्तु केवल उसी भाषा द्वारा हम बच्चों को नहीं समझ सकते है। उसके लिए उसमें सामाजिक परिवेश को समझना आवश्यक है, जिसके द्वारा हम बच्चे के मानसिक क्रियाओं को प्रभावित कर सकते है। समाज में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भाषा के माध्यम से करता है क्योंकि यह किसी से सम्पर्क व संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। भाषा के द्वारा ही विचारों के निर्माण व अभिव्यक्ति को बनाने में व संचालन में प्रमुख भूमिका निभाती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

किसी भी शोध समस्या के चयन का एक निश्चित आधार होता है जो शोध से सम्बन्धित सन्दर्भो तथा स्रोतों से मिलता हैं। प्रत्येक शोध समस्या व्यक्ति तथा समाज के अस्तित्व के किसी न किसी पक्ष से अवश्य जुड़ी होती है। ज्ञान के संगठन की प्रक्रिया में शोध एक प्रणालीबद्ध ढ़ग से अपना स्वरुप ग्रहण करता है और इस प्रकार शोध साहित्य का विकास होता है।

पण्डित (1969, 72, 88), पटनायक (1990), श्रीवास्तव (1988) ने भारतीय बहुभाषिकतावाद के अध्ययनों में बतलाया है कि कैसे भाषिक व्यवहार की विविधता बहुभाषिक समाजों में सम्प्रेषण को बाधित करने के बजाय सहायता ही प्रदान करती है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

यूरोपीय कमीशन, एजुकेशन एण्ड कल्चर (2009) ने अपने अध्ययन श्रचनात्मकता के लिए बहुभाषा का योगदानश् शीर्षक नामक प्रोजेक्ट में रचनात्मकता के लिए बहुभाषा के योगदान का वैज्ञानिक जांच किया। इस अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि बहुभाषा हमारी रचनात्मक क्षमता को साकार करतें हुए सभी क्षेत्रों में कार्य करती हैं- 1. बहुभाषा और रचनात्मकता के बीच एक कड़ी हैं। 2. बहुभाषा सूचना तक पहुँच को व्यापक बनाता हैं। 3. बहुभाषा विचारों के प्रस्तुति हेतु वैकल्पिक तरीका प्रदान करता हैं। 4. बहुभाषा आस-पास की दुनिया को मानने के वैकल्पिक तरीका प्रदान करता हैं। 5. एक नई भाषा से रचनात्मक विचारों की क्षमता बढ़ती हैं।

कोवर व अन्य (2012) बहुभाषावाद के जागरुकता बढ़ाने के लिए यूरोपीय अभियान में भाषा विविधता को एक सार्वभौमिक मानव अधिकार बताया गया हैं। स्वदेशी भाषाओं की रक्षा करना और उनका संरक्षण करना है सार्वभौमिक मानवाधिकारों का हिस्सा है। हर मानव के पास अपनी भाषा का उपयोग करने का अधिकार है। भाषा अपनी खुद की पहचान और संचार के साधन के आधार पर और मानव जाति की सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा भी है।

जॉनसन और फ्लोरेस (1961), हॉक और लिनो (1963), डिमोट (2001) ने भाषायी जागरूकता और शिक्षा के विकास के लिए द्विभाषा सीखने पर बल दिया। जिससे उनमें भाषायी जागरूकता और वाक्यात्मक संरचना बढ़ जाता है। मर्सिया (2008), यासीन (2013) इन्होंने द्विभाषी शिक्षा के लिए प्रेरणा को आवश्यक तत्व माना तथा अध्ययनों में पाया कि दूसरी भाषा सीखने में विद्यार्थियों के भाषा स्तर तथा प्रेरणा को उम्र, लिंग माता-पिता की शिक्षा और अकादमिक प्रदर्शन प्रभावित करते हैं।

प्रपन्न (2005) ने अपने लेख भाषायी विविधता को एक किस्म से हमारी भाषायी विविधापूर्ण संस्कृति की पहचान बताया है। यदि हम इस विविधता की परिधि में सीमित करके विमर्श कर सकें तो वह एक दिलचस्प होगा। जहां हमारी पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यपाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या भाषायी विविधता की वकालत करती हैं वही कक्षायी स्थिति का अवलोकन करें तो वह विविधता एक या दो भाषा में सिमट कर रह जाती। जिससे हमारी भाषायी विविधता और सैद्धान्तिक स्थापनाएं पीछे रह जाती हैं, हमारी स्कूली भाषा और समाज में बरती जाने वाली भाषा के बीच एक अस्पष्ट और कई बार साफ फांक नजर आती हैं।

राजसेकन, सुभाषिनी एवं कुमार, राजेश (2020) इस लेख में भारत में शिक्षा में निहित विषम लैंगिक बहुभाषिकता का लाभ उठाने और जनता के बीच इसकी समझ और मूल्य को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया हैं, जो इस प्रकार हैं-विद्यालय की समग्र संरचना ऐसी है जिसमें 25-45 विद्यार्थियों के समूह होते है, जिसमें एक निश्चित कार्यक्रम में 30 से 45 मिनट की अवधि के बीच स्पष्ट रुप से सीमांकित सीमाएं होती हैं। इसके बीच विद्यार्थियों की भाषाओं को शामिल करना मुश्किल कार्य बताया। एक माध्यम भाषा आसान प्रस्ताव हैं। माध्यम भाषा की आड़ में विद्यालय यह स्पष्ट करने में विफल रहते है कि जो भाषा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत पहचान होती है वे मान्यता के योग्य नहीं हैं, वे हीन नहीं हैं लेकिन शैक्षिक मूल्य नहीं रखते हैं। कुल मिलाकर विद्यालय की संरचना अपने विद्यार्थियों की बहुभाषिकता की सराहना करने में असमर्थ हैं।

दास, नीना (2019) इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 1. समावेशी शिक्षा में बहुभाषी संदर्भो के लिए भाषाई रुप से उत्तरदायी शिक्षण ढाचे का पता लगाना 2. समावेशी शिक्षा में बहुभाषी संदर्भो में समस्याओं और मुद्दों की समस्याओं का पता लगाना। इस अध्ययन में खोज पूर्ण विधि का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के प्रथम उद्देश्य

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

में आंकडे के प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों द्वारा परिणाम में यह दर्शाया गया कि मातृभाषा आधारित द्विभाषी या बहुभाषी शिक्षा सभी के सीखने और सीखाने पर सकरात्मक प्रभाव डालती है। जो कि प्रासंगिक शिक्षा में समावेश और गुणवत्ता के लिए एक महत्वपूर्ण कारण हैं। विद्यार्थियों को उनकी स्थानीय भाषा में पढ़ाया जाता है तो केवल अंग्रेजी में पढ़ाये जाने वाले विद्यार्थियों की तुलना में इन विद्यार्थियों के पढ़ने और समझने में उपलब्धि में चिन्हित लाभ होता है। जबकि दूसरे उद्देश्य के परिणाम के रुप में निम्न समस्याओं की पहचान की गई। 1. कमजोर भाषाई पृष्ठभूमि 2. विद्यार्थियों में भाषा को लेकर चिंता 3. विस्तृत पाठ्यक्रम 4. प्रशिक्षित शिक्षक की कमी विद्यार्थियों।

सेम्बिएंटे, सबरीना (2011) ने अपने पुस्तक लैंग्वेज एण्ड एजुकेशन में एडवर्डस, ब्रिस्टल के बहुभाषी मैटर्स को शामिल किया है, जिसमें कक्षा की भाषा विविधता के बारे में उल्लेख किया गया हैं। इस पुस्तक में कक्षा में भाषा विविधता को एक मूलभूत पाठ के रुप में प्रस्तुत किया गया है- कक्षा में भाषा विविधता के कारण एक दूसरे से संपर्क स्थापित करने में उत्पन्न चुनौतियां एक द्वन्द्वात्मक गलतफहमी के रुप में बनी रहती है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों, विद्यार्थियों, प्रशिक्षकों को प्रभावित करती है।

प्रपन्न (2005) ने अपने लेख में उल्लेख किया है कि- भाषायी विविधता एक किस्म से हमारी भाषायी विविधापूर्ण संस्कृति की पहचान कराती है। यदि हम इस विविधता की परिधि में सीमित करके विमर्श कर सकें तो वह एक दिलचस्प होगा। जहां हमारी पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यपाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या भाषायी विविधता की वकालत करती हैं वही कक्षायी स्थिति का अवलोकन करें तो वह विविधता एक या दो भाषा में सिमट कर रह जाती है। यहां दो भाषा में सिमट कर रह जाती हैं। यहां हमारी भाषायी विविधता और सैद्धान्तिक स्थापनाएं पीछे रह जाती हैं जब हम बच्चों को मानक भाषा की ओर हांक देते हैं। हमारी स्कूली भाषा और समाज में बरती जाने वाली भाषा के बीच एक अस्पष्ट और कई बार साफ फांक नजर आती हैं।

जॉनसन, टाव (2015) इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि बनारस के विद्यालय में विविध संस्कृति एवं भाषा के विद्यार्थियों के साथ शिक्षक कक्षा में किस प्रकार कार्य करते है। इस अध्ययन में बनारस के एक सरकारी विद्यालय के पाँच शिक्षक का साक्षात्कार लिया गया, जिसके द्वारा उनके कार्य करने के तरीके एवं विचारों को जाना गया। कक्षाओं के दौरान और कक्षा के बाहर का अवलोकन किया। परिणाम के रुप में पाया कि कक्षा में भाषा विविधता होने के कारण शिक्षक अपने पाठ के दौरान छात्रों की भाषा का प्रयोग नहीं कर रहें जबकि उनके विचार के अनुसार कक्षा में छात्रों की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। सभी शिक्षक मानते थे कि छात्रों की अलग पृष्ठभूमि, विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, भाषिक क्षेत्रों से आते है इनको कक्षा में भाषा द्वारा ही समायोजित किया जा सकता से हैं। अवलोकन के दौरान यह भी देखा गया कि छात्रों का भाषाई कौशल इनकी पृष्ठभूमि पर निर्भर था। वह इसलिए भाषा और संस्कृति के बीच एक महत्वपूर्ण भाग के रुप में संबंध देखा गया।

सिन्हा (2006) ने अपने अध्ययन में वाराणसी में विभिन्न विद्यालयों के 390 विद्यार्थियों के समूह में 15 भाषाओं की पहचान की गयी। विविध भाषा बोलने वाले की संख्या इस प्रकार है- हिन्दी 124, भोजपुरी 90, उर्दू 40,अंग्रेजी 02,संस्कृत 05, बंगाली 40, तमिल 13, तेलगू 11, गुजराती 10, मराठी 10, पंजाबी 12, मारवाड़ी 08, नेपाली 15, सिन्धी 05, एवं में मलयालम 05, पायी गयी। इन विद्यार्थियों में अन्य भाषा के रुप में हिन्दी, भोजपुरी ,अंग्रेजी एवं बंगाली बोलने वाले की संख्या सबसे अधिक मिली, जबकि विद्यालय में पढ़ाये जाने की भाषा हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं संस्कृत थी।

Copyright @ 2020 Authors

अंकिता (2005) ने अपने शोध में उल्लेख किया कि वाराणसी शहर में हिन्दू , मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मो के मतावलम्बी के साथ विविध भाषायी- कश्मीरी, बंगाली, गुजराती, मारवाड़ी, मराठी, नेपाली, सिन्धी, पंजाबी, मैथिली, मलयाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि विभिन्न प्रकार के लोग यहाँ एक लम्बे समय से साथ-साथ रह रहे। इन विभिन्न भाषा विविधता के बीच इस शोध में केवल चार भाषाभाषी समुदाय को शामिल किया गया- बंगाली, गुजराती, मराठी तथा पंजाबी। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि- वाराणसी में बंग्ला भाषा में शिक्षण का कार्य विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय तीनों स्तर पर किया जाता हैं जबकि मराठी भाषी समुदाय के भी कई विद्यालय वाराणसी में हैं परन्तु अब इन में मराठी भाषा नहीं पढ़ायी जाती। मराठी भाषा शिक्षण का कार्य वर्तमान समय में केवल विश्वविद्यालय स्तर पर ही होता हैं। इसी तरह गुजराती समाज द्वारा स्थापित कुछ विद्यालय तो है पर अब उनमें गुजराती भाषा में शिक्षण कार्य बन्द हो गया हैं ,जबकि पंजाबी समुदायों द्वारा वर्तमान समय में कुछ विद्यालयों में पंजाबी भाषा में प्राथमिक स्तर तक शिक्षा दी जाती हैं , उच्च कक्षाओं में पंजाबी भाषा को वैकल्पिक विषय के रुप में रखा गया हैं।

पणिग्रही (2017) ने अपने प्रोजेक्ट में वाराणसी के सांस्कृतिक व भाषायी विविधता का उल्लेख करते हुए यहाँ के विविध धर्म संस्कृति,भाषा, समाज और अर्थव्यवस्था, शिल्प कौशल आदि विविधताओं के द्वारा सांस्कृतिक विविधता के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान है। कई भाषाओं को बोलने वाले हिन्दू, बौद्ध, जैन, एवं इस्लामिक निवास करते इस हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बहुभाषिकता पर हुए अध्ययनों के आधार पर हम पाते हैं कि बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास व शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक जुड़ाव है। जिससे उनका अकादमिक स्तर में वृद्धि होती है। भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र (2009) में कहा गया है कि दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं का अच्छा नियन्त्रण रखते है, बल्कि शैक्षिक स्तर पर भी उनमें सामाजिकता और सहिष्णुता पाई गई है। भाषिक खजाने की व्यापक व्यवस्था पर नियंत्रण उन्हें विविध प्रकार की एवं विविध स्तर की सामाजिक परिस्थितियों से कुशलतापूर्वक जूझने में सहायक होता है। साथ ही इस बात के पक्के सबूत मिले हैं कि द्विभाषी बच्चे विविध सोच में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन करते हैं। दो अलग-अलग भाषाओं में सोचने की क्षमता एक परिष्कृत मानसिक व्यायाम है जो द्वविभाषी बच्चे को स्वाभाविक रूप से आता है। शब्दावली व व्याकरण के दो सेट सीखने की क्रिया तथा संज्ञानात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उपरोक्त अध्ययनों में भाषायी विविधता एवं बहुभाषिकता के महत्ता एवं भाषायी संरक्षण की दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इस लेख में शोधकर्ती के मन में जिज्ञासा हुई कि वाराणसी शहर में जो कि विविध भाषायी संस्कृति से परिपूर्ण हैं, यहाँ कि भाषायी विविधता की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना। अतः इस अध्ययन के लिए शोधकर्ती के मन में निम्नलिखित प्रश्नों का विचार आया।

वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में विभिन्न पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति किस प्रकार हैं?

प्रमुख शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा

 Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित संक्रियात्मक शब्दों का नीचे दी गई परिभाषाओं के अनुरुप उपयोग किया गया हैं।

उच्च प्राथमिक विद्यालय

यहाँ इसका तात्पर्य वाराणसी शहर में सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड से मान्यता प्राप्त कक्षा 6 से 8 तक विद्यालयों से है।

भाषायी विविधता

भाषायी विविधता से तात्पर्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं से है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

1. वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में यथार्थ स्थिति को ज्ञात करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध समग्र

इस शोध हेतु समग्र के रूप में वाराणसी शहर के सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड से मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अध्ययन के समग्र के रुप में लिया गया।

न्यायदर्श एवं न्यायदर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में वाराणसी शहर में स्थित सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड के कुल उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से 10 प्रतिशत विद्यालयों (सी0बी0एस0ई0 के 06 एवं यू0पी0 बोर्ड के 14) का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। चयनित प्रत्येक विद्यालय के कक्षा आठ के एक वर्ग का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया, जिसके सभी विद्यार्थियों को न्यायदर्श के रुप में सम्मिलित किया गया। न्यायदर्श का विस्तृत विवरण सारिणी सं0 1. में दिया गया है।

सारिणी सं0 01.

क्र0सं0	चयनित इकाई	यू0पी0 बोर्ड	सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	योग
01	कुल विद्यालयों की संख्या	140	60	200
02	चयनित विद्यालयों की संख्या	14	06	20
03	चयनित विद्यार्थियों की संख्या	605	285	890

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संकलन हेतु कुशवाहा एवं सिंह (2018) निर्मित . भाषायी विविधता जाँच सूची नामक उपकरण का उपयोग किया गया। इसके अंतगर्त कुल 25 भाषाओं (1.हिन्दी 2. उर्दू 3. अंग्रेजी 4. भोजपुरी 5. बांग्ला 6. पंजाबी 7. गुजराती 8. संथाली 9. मैथिली 10. संस्कृत 11. सिन्धी 12. तेलुगू 13. मणिपुरी 14. मलयालम 15. तमिल 16. कन्नड़ 17. असमिया 18. कोंकणी 19. बोड़ो 20. कश्मीरी 21. डोगरी 22. ओड़िया 23. मराठी 24. नेपाली 25. मारवाड़ी) को क्रमशः 1 से 25 तक रखा गया एव क्रम 26 पर अन्य भाषा को निश्चित किया गया।

इस उपकरण की जाँच के चार विकल्प (बोलना, पढ़ना, लिखना एवं बोलना पढ़ना लिखना) रखे गये। उपकरण की वैधता हेतु चार विषय विशेषज्ञों (01. प्रधानाचार्य, 01. विद्यालय विषय विशेषज्ञ, 01. भाषाविद शिक्षक-प्रशिक्षक एवं 01 भाषा विशेषज्ञ) के परीक्षण के उपरान्त अन्तिम रुप प्रदान किया गया।

आँकडा विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में आंकडों की प्रकृति के अनुरुप प्रतिशत को निकाला गया जिसके आधार पर आंकड़ां का विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत किया गया।

सारिणी सं0 02: उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की स्थिति

क्रम सं0	भाषा	सृंयुक्त रुप से पढ़ने, लिखने एवं बोलने की आवृत्ति व प्रतिशत	बोलने एवं देखकर लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	पढ़ने बोलने की आवृत्ति व प्रतिशत	देखकर पढ़ने एवं लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र लिखने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र पढ़ने की आवृत्ति व प्रतिशत	मात्र बोलने की आवृत्ति व प्रतिशत
1.	हिन्दी	884 (99.32%)	5 (0.56%)	1 (0.11%)	0	0	0	0
2-	उर्दू	86 (9.66%)	1 (0.11%)	0	3 (0.33%)	4 (0.44%)		21 (2.35%)
3-	अंग्रेजी	370 (41.57%)	2 (0.22%)	0	419 (47.07%)	87 (9.77%)	0	9 (1.01%)
4-	भोजपुरी	1 (0.11%)		0	0	1 (0.11%)		749 (84.15%)
5-	बांग्ला	47	0	3	0	1	0	91(10.22

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

		(5.28%)		(0.33%)		(0.11%)		%)
6-	पंजाबी	28 (3.14%)	0	2 (0.22%)	1 (0.11%)	0	0	63 (7.07%)
7-	गुजराती	5 (0.56%)	0	1 (0.11%)	0	0	0	19 (2.13%)
8-	संथाली	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
9-	मैथिली	8 (0.89%)	0	1 (0.11%)	0	0	0	119 (13.37%)
10-	संस्कृत	64(7.19%)	0	0	636(71.46%)	141(15.84%)	1 (0.11%)	0
11-	सिन्धी	2 (0.22%)	0	0	0	0	0	36 (4.04%)
12-	तेलुगू	0	0	0	0	0	0	3(0.33%)
13-	मणिपुरी	X	X	X	X	X	X	X
14-	मलयालम	X	X	X	X	X	X	X
15-	तमिल	**0**	0	0	0	0	0	6 (0.33%)
16-	कन्नड़	**0**	0	0	0	0	0	1 (0.11%)
17-	असमिया	X	X	X	X	X	X	X
18-	कोंकणी	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
19-	बोड़ो	0	0	0	0	0	0	2 (0.22%)
20-	कश्मीरी	X	0	0	0	0	0	12 (1.34%)
21-	डोगरी	X	X	X	X	X	X	X
22-	ओड़िया	2 (0.22%)	0	0	0	0	0	3 (0.33%)
23-	मराठी	8 (0.89%)	0	0	0	0	0	21 (2.35%)
24-	नेपाली	0	0	0	0	0	0	26 (2.92%)
25	मारवाड़ी	0	0	0	0	0	0	8 (0.89%)

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

उपरोक्त तालिका संख्या 01 में भाषाओं के समक्ष दी गई संख्या आवृत्तियां एवं कोष्ठक में प्रतिशत को दर्शाया गया। इस तालिका में दिये गये आंकड़ों की आवृत्तियों एवं प्रतिशत के अनुसार वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषायी विविधता की के सन्दर्भ में 25 भाषाओं में से 21 भाषाओं (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, भोजपुरी, बांग्ला, पंजाबी, गुजराती, संथाली, मैथिली, संस्कृत, सिन्धी, तेलुगू, तमिल, कन्नड, कोंकणी, बोड़ो, कश्मीरी, ओड़िया, मराठी, नेपाली, मारवाड़ी) को विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा भाषा उपयोग की स्थिति में विविधता पायी गई। जबकि मणिपुरी, मलयालम, असमिया एवं डोगरी भाषा प्रयोग के एक भी विद्यार्थी नहीं पाये गयें। विद्यार्थियों द्वारा 21 भाषाओं की प्रयोग को 7 प्रकार की स्थितियों में आकड़ों के प्रतिशत की व्याख्या इस प्रकार से प्रस्तुत की गयी -

1. संयुक्त रुप से बोलने, पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 12 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें हिन्दी भाषा का सर्वाधिक 99.32 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 41.57 प्रतिशत इसी प्रकार अन्य भाषाओं का क्रम क्रमशः उर्दू 9.66 प्रतिशत, संस्कृत 7.19 प्रतिशत, बंग्ला 5.28 प्रतिशत, पंजाबी 3.14 प्रतिशत, मैथिली 0.89 प्रतिशत, मराठी 0.89 प्रतिशत, गुजराती 0.56 प्रतिशत, भोजपुरी 0.22 प्रतिशत, ओडिया 0.22 प्रतिशत पाया गया।

2. बोलने के साथ देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 03 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें हिन्दी भाषा का सर्वाधिक 0.56 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 0.22 प्रतिशत एवं उर्दू भाषा 0.11 प्रतिशत पाया गया।

3. बोलने के साथ पढ़ने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 06 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें बांग्ला भाषा का सर्वाधिक 0.33 प्रतिशत पाया गया। जबकि पंजाबी भाषा का 0.22 प्रतिशत, हिन्दी भाषा 0.11 प्रतिशत, भोजपुरी 0.11 गुजराती 0.11 एवं मैथिली भाषा 0.11 प्रतिशत पाया गया।

4. बिना समझ के साथ पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें संस्कृत भाषा का सर्वाधिक 71.46 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 47.07 प्रतिशत, उर्दू भाषा 0.33 प्रतिशत एवं पंजाबी भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।

5. मात्र देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें संस्कृत भाषा का सर्वाधिक 15.84 प्रतिशत पाया गया। जबकि अंग्रेजी भाषा का 9.77 प्रतिशत, उर्दू भाषा 0.44 प्रतिशत एवं बांग्ला भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।

6. बिना समझ के साथ मात्र पढ़ने की स्थिति के सन्दर्भ में केवल 01 भाषा संस्कृत की पहचान की गई। जिसका 0.11 प्रतिशत पाया गया।

7. मात्र बोलने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 19 भाषाओं की पहचान की गई। जिनमें भोजपुरी भाषा का सर्वाधिक 84.15 प्रतिशत पाया गया। जबकि मैथिली भाषा का 13.37 प्रतिशत, इसी प्रकार अन्य भाषाओं का क्रम क्रमशः बांग्ला भाषा का 10.22 प्रतिशत, पंजाबी भाषा का 7.07 प्रतिशत, सिन्धी भाषा का 4.04 प्रतिशत, नेपाली भाषा का 2.92 प्रतिशत, उर्दू भाषा 2.35 प्रतिशत, मराठी भाषा का 2.35 प्रतिशत, गुजराती भाषा का 2.13 प्रतिशत, काश्मीरी भाषा का 1.34 प्रतिशत, अंग्रेजी भाषा का 1.01 प्रतिशत, मारवाड़ी भाषा का 0.89 प्रतिशत, तेलुगू भाषा का 0.33 प्रतिशत, तमिल भाषा का 0.33 प्रतिशत, ओडिया भाषा का 0.33

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

प्रतिशत, संथाली भाषा का 0.22 प्रतिशत, कोंकणी भाषा का 0.22 प्रतिशत, बोडो भाषा का 0.22 प्रतिशत एवं कन्नड भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया।

निष्कर्ष एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त प्राप्त परिणामों से यह विदित होता हैं कि वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच भाषायी विविधता मौजूद है। जिसका विवरण इस प्रकार हैं-

25 भाषाओं में से 21 भाषाओं (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, भोजपुरी, बांग्ला, पंजाबी, गुजराती, संथाली, मैथिली, संस्कृत, सिन्धी, तेलुगू, तमिल, कन्नड, कोंकणी, बोड़ो, कश्मीरी, ओड़िया, मराठी, नेपाली, मारवाड़ी) को विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा भाषा उपयोग की स्थिति में विविधता पायी गई। जबकि 4 भाषा मणिपुरी, मलयालम, असमिया एवं डोगरी भाषा का प्रयोग करने वाले एक भी विद्यार्थी नहीं पाये गयें। विद्यार्थियों द्वारा 21 भाषाओं के प्रयोग के रुप में सबसे अधिक प्रयोग बोलने के रुप में कुल 19 भाषा की पहचान किया गया, क्योकि ये इनकी मातृभाषा होने के कारण इन्हे घर पर तो बोलना जानते है लेकिन पढ़ना-लिखना नही जानते, जबकि संयुक्त रुप से पढ़ने, लिखने एवं बोलने की स्थिति में केवल 12 भाषा की पहचान हुई, जिनमें से केवल 6 भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत , उर्दू, बांग्ला, पंजाबी) को एक विषय के रुप में यहाँ के विद्यालयों में पढ़ाया जाता है एवं अन्य 6 भाषा का ज्ञान घर या अन्य प्रदेश में प्राप्त शिक्षा से हुआ है, इन विद्यार्थियों को वर्तमान समय में इन भाषाओं के अध्ययन की कोई सुविधा प्राप्त नही हैं। इसी क्रम में बोलने एवं देखकर लिखने (नकल) की स्थिति में कुल 03 भाषा (जिनमें हिन्दी भाषा का 0.56 प्रतिशत, अंग्रेजी भाषा का 0.22 प्रतिशत एवं उर्दू भाषा 0.11 प्रतिशत पाया गया) जबकि इन विद्यालयों में इन भाषाओं को पढ़ाया जाता हैं लेकिन इन भाषा को पढ़ने में कुछ विद्यार्थी को समस्या का सामना करना पड़ता हैं। केवल बोलने के साथ कुछ- कुछ पढ़ने की स्थिति में 5 भाषा की पहचान किया गया (जिनमें बांग्ला भाषा का 0.33 प्रतिशत, पंजाबी भाषा का 0.22 प्रतिशत, हिन्दी भाषा 0.11 प्रतिशत, गुजराती 0.11 एवं मैथिली भाषा 0.11 प्रतिशत पाया गया) इन विद्यार्थियों की मातृभाषा होने के कारण बोलने में तो दक्षता प्राप्त है, सरल वाक्यों को पढ़ना आता लेकिन लेकिन लेखन में समस्या होती हैं। बिना समझ के साथ पढ़ने एवं लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई, (जिनमें संस्कृत भाषा 71.46 प्रतिशत, अंग्रेजी भाषा का 47.07 प्रतिशत, उर्दू भाषा 0.33 प्रतिशत एवं पंजाबी भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया)। मात्र देखकर (नकल) लिखने की स्थिति के सन्दर्भ में कुल 04 भाषाओं की पहचान की गई। (जिनमें संस्कृत भाषा 15.84 प्रतिशत, अंग्रेजी भाषा का 9.77 प्रतिशत, उर्दू भाषा 0.44 प्रतिशत एवं बांग्ला भाषा का 0.11 प्रतिशत पाया गया)

बिना समझ के साथ मात्र पढ़ने की स्थिति के सन्दर्भ में केवल 01 भाषा संस्कृत की पहचान की गई। जिसका 0.11 प्रतिशत पाया गया।

इस अध्ययन के निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता हैं कि वाराणसी शहर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच में भाषायी विविधता व्याप्त हैं। इन विद्यार्थियों के घर की प्रयोग करने वाली भाषा विद्यालय की माध्यम भाषा से अलग पाया गया लेकिन उनकी भाषा का प्रयोग कक्षाओं में नहीं किया जाता। यहाँ के विद्यालयों में हिन्दी एवं अंग्रेजी को माध्यम भाषा के रुप में अपनाया गया है जबकि विषय के रुप में हिन्दी, संस्कृत, एवं अंग्रेजी के अलावा कोई-कोई विद्यालय में उर्दू, बंग्ला एवं पंजाबी भाषा को पढ़ाया जाता है। सिन्हा (2006) ने 15 भाषाओं की पहचान किया एवं आचार्य (2016) ने भी अपने अध्ययन में वाराणसी

Copyright @ 2020 Authors

शहर के विद्यालयों में 13 भाषाओं की पहचान किया जबकि इस अध्ययन में 21 भाषाओं की विविधता पायी गई। सभी विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि द्विभाषी या बहुभाषी पायी गयी। इन भाषाओं को बोलने वाले लोग का हिन्दी एवं अंग्रेजी के ओर झुकाव तेजी से बढ़ रहा है। अधिकांश विद्यार्थियों समूह भोजपुरी पृष्ठभूमि से संबंधित है लेकिन इसका प्रयोग कक्षा में पूरी तरह वर्जित माना जाता है। इसी प्रकार की मनाही को अवतंस (2008) ने इसे भाषाई संकट की संज्ञा दिया है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि विभिन्न भाषाओं को जानने वालों का सामाजिक एवं शैक्षिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। बहुभाषिकता पर हुए अध्ययनों के निष्कर्ष में पाया गया कि बहुभाषिकता, संज्ञानात्मक विकास व शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रुप से जोड़ने का कार्य करता है जिससे उनका शैक्षिक स्तर में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) एवं भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र (2009) में भी बहुभाषिकता को कक्षा अपनाने पर बल दिया गया। जिससे विविध भाषा के साथ विविध प्रकार की सोच में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

सन्दर्भ

- अवतंस, अभिषेक (2008). भाषाई विविधता और ज्ञानपोषित समाज. रिट्राइव्ड फ्रामः *https://rapidiq.wordpress.com/2008/10/07/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%88-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A7%E0%A4%A4%E0%A4%BE-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%AA%E0%A5%8B/* रिट्राइव्ड आॅन 13.06.2018.
- अग्निहोत्री, रमाकान्त (1995).बहुभाषिकताः एक कक्षा स्रोत अनुवादक तिवारी, निशी , (2013).शैक्षणिक संदर्भ अंक 28 (85)i`0. 43-53. रिट्राइव्ड फ्रामः *https://www.eklavya.in/pdfs/sandarbh/sandarbh-85/43-53 multilingualism-A-classroom-Resource.pdf.*
- आचार्य, अंकिता (2016). वाराणसी शहर के मुख्य अल्पसंख्यक भाषाभाषी समुदायों का समाजभाषिक अनुशीलन. अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध. भाषा विज्ञान लखनऊ विश्वविद्यालय. प्राप्त किया *https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/43680*
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र (2009). नई दिल्ली: एन0सी0ई0आर0टी0.
- Dash , Neena (2019). Linguistically Responsive Teaching Framework for Multilingual Contexts: Problems and Issues with Reference To Multi-Lingual Education in Inclusive. JETIR January 2019, Volume 6, Issue 1. *https://www.academia.edu/38465759/Problems_and_Issues_with_Reference_To_Multi-Lingual_Education_in_Inclusive_Classroom*
- डिमोट, एल (2001). भाषाई जागरूकता और शिक्षा के विकास के लिए द्विभाषा सीखने का योगदान. मनोविज्ञान इंटरनेशनल जर्नल. 36(4).

 Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

- हॉक और लिनो (1963). प्राथमिक विद्यालयों में स्पेनिश के शिक्षण और अन्य चयनित विषय क्षेत्रो में उपलब्धि पर प्रभाव. एरिक. वेबसाइट.
- जॉनसन और फ्लोरेंस (1961). प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा पर विदेशी भाषा शिक्षा का प्रभाव. आधुनिक भाषा के जर्नल- 45(5).
- जॉनसन, टाव (2015). मल्टीकल्चर इज नाट प्राब्लम बट द डाइवर्स बैकग्राउडस आर: ए स्टडी एबाउट फाइव टीचर्स थार्टस एबाउट मल्टीकल्चर टीचिंग इन गर्वनमेंट स्कूल इन बनारस. डिग्री पेपर, 15 एच0पी0 टीचर प्रोग्राम. रिट्राइव्ड फ्राम: *https://www.divaportal.org/smash/get/diva2:787075/FULLTEXT01.pdf* रिट्राइव्ड ऑन 16.09.2019.
- पटनायक, डी0 पी0 (1990). मल्टीलिंनगुअलिज्म इन इण्डिया. रिव्यु बाई एंटोनी जॉन कुनान. इश्यू इन अप्लाइड लिंगुस्टिक जर्नल, वोल्युम 3(1). रिट्राइव्ड फ्राम *https://escholarship.org/uc/item/541548n0* रिट्राइव्ड ऑन 02-11-2019-
- प्रपन्न, कौशलेन्द्र (2006). भाषायी विविधता का उत्सव. प्राप्त किया *gadyakosh.org/gk./.*
- पणिग्रही, अमरेश (2017). कल्चर डाइवर्सिर्टी ऑफ वाराणसी एण्ड इटस् इमपैक्ट ऑन विजुअल आइडिन्टी ऑफ सॉफ्ट स्टोन का◌ॅफ्ट, रामनगरः ए परस्पेक्टिव ऑफ डिजानइ लेड इनोवेशन टू एम्पेथीज मल्टिप्लिसिटी. *https://s3.amazonaws.com/academia.edu.documents/58508168/A_Treatise_on_Recent_Trends_and_Sustainability_in_Crafts___Design_Amresh_Panigrahi.pdf?response-content-disposition=attachment%3B%20filename%3DCultural_Diversity_of_Varanasi_and_Its_I.pdf&X-Amz-Algorithm=AWS4-HMAC-SHA256&X-Amz-Credential=AKIAIWOWYYGZ2Y53UL3A%2F20200108%2Fus-east-1%2Fs3%2Faws4_request&X-Amz-Date=20200108T100420Z&X-Amz-Expires=3600&X-Amz-SignedHeaders=host&X-Amz-Signature=bf373523b74a3528ef50e89e4e023c84a808ed0afb265025b1075ff1286ea697* से प्राप्त किया.
- राजसेकन, सुभाषिनी एवं कुमार, राजेश (2020). चैलेन्जेज एण्ड स्ट्रेटेजी फोर मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन इण्डिया. ए जर्नल ऑफ टीचिंग इंग्लिश लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर ऑनलाइनः 2394-9244. रिट्राइव्ड फ्राम: *http://www.fortell.org/content/challenges-and-strategies-multilingual-education-india* रिट्राइव्ड ऑन 18-10-2019-
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005). नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी
- सिन्हा, अंजलि (2006). *मल्टीलिंगुअलिस्म इन अर्बन वाराणसी*. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध लिंगविस्टिक विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय.
- यूरोपीय कमीशन, एजुकेशन एण्ड कल्चर 2009). स्टडी ऑन द कंट्रीब्यूशन ऑफ मल्टीलिंगुअलिस्म टू क्रिएटिविटीण् रिर्पोट पब्लिक सर्विस का◌ॅन्ट्रैक्ट. *http://www.dylan-project.org/Dylan_en/news/assets/StudyMultilingualism_report_en.pdf*

Copyright @ 2020 Authors

- यासीन, मु0 (2013). प्रेरणा की भूमिका.अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक फोरम, प्राप्त किया. 3/2/2016 *www.iafor.org*.

Copyright @ 2020 Authors